

तुलसी आधुनिक वातायनसे

डॉ० रमेश कुन्तल मेघ



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

लोकोदय प्रथमाणा प्रस्थापक-२४३
 सन् १९६७ वर्ष विषयमकः
 छद्मावगन्तु श्रित



Lokodaya Series Title 1)

TULSI
 ADHUNIK VATAVANSI

(Title)

Dr Ram shankar Mishra

Bharatiya Jnanpith
 Publication

1997 1997 1997

Price Rs 1 00

©

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय

६ अलीपुर बाग प्लस बलरूपा २७

प्रकाशन कार्यालय

दुर्गाचौपट माग वाराणसी ५

विजय पेठ

१६२ १२२ नेताजी सुभाष माग, दिल्ली ६

प्रथम आवरण १९६७

मूल्य १२ ००

संस्कृत मुद्रणालय
 वाराणसी-५

विचार-दीपका आलोकन

नागरिक, नागरक, सत्त, भक्त और कवि तुलसादास—जिनका वचनका नाम 'रामदास' था—पर सात उपनिषद्वाली हमारे इस गाछमें न ता काकमुष्णि और गरुड, न मानवन्वय और भरद्वाज न शिव और पावती और न ही भरद्वाज और तुलसा मौजूद हैं। उनकी एक मियकीय एव आख्यात्मक ऐतिहासिक दुनिया थी। हमारी इस गाछीका आयोजन बीमवीं सतीक भारतक मचपर हा रडा ह जलकी ययायता और स्वप्न दूमरे ह। आज हम भारतस ह्य मामताय सस्कारके खरम करनपर जुट है जा वणाश्रम धम और नारीकी दासताकी वजहस ग्राम विकासको राकत है गहरामें बन्-बड भारी उद्यागाका कायम करनपर जुटे ह जा समाजवाक् लिए इम्पात्र बिजली जेट वायुमान औद्योगिक माल पंग करेग। आजक खल यक्ति नहीं, समूह और बग ह आजक सत्त भी सामाजिक दानिक ह। किन्तु हमार बतमान और इतिहासकी एक महान् परम्परा जा ह्य ह जा एर निरन्तर जावत प्रक्रिया ह। तुलसाकी आधुनिक गन्नापम दखन-मुनन-समझनेका मतलब ह अपन भारतकी बहुसंख्यक जनताक परम्परागत आत्माँ तथा जावन मूल्योंकी ठास चुनौतियाका अध्ययन। साहित्य और कलाओंका या ता समाजका दपण माना जाता रहा ह, अथवा 'दापक'। हमन वातायन या पराख का प्रताक लिया ह जहाँस भारतक मध्ययुगका विविधता साकार हा उठनी ह। हमारा आजकी गाछमें कवल आस्तिक पाठक और सनातन सस्कारवाल आलाचक ही नहीं, बल्कि राज नातिन अथगास्त्री समाजशास्त्री नृवगास्त्री, सौदयराथगास्त्री वनानिक मनाविश्लेषक, माक्सवादी, काप्रेस, समाजवादी आदि भा शामिल ह। अत हम अस गाछीका शुद्ध साहित्यिक घरातलस उठाकर सम्पूर्ण सस्कृतिकी आधु निरन्तरक बागपर कायम करेग और इन सभी सहभाक्ताजाका मिला जुग नया दृष्टियाम क्षरायक पारका सिद्धान्त करेगे।

यह गाछ मध्यकाल अध्ययनशास्त्र (मडोवल स्टन्ड) का विकास करनका निगामें एक अगला कर्म ह। हिन्गामें मध्यकाल अध्ययनका प्रथम गम्भार चष्टा आषाय शुक्लन की, किन्तु व उत्तर सिद्ध सस्कारास भी माहित

ये। अब उन्हा उतर हि दू-दुष्टिकापणे इतिहासको देखा। आचार्य ह्यागी प्रमाण द्वि तन मध्यकालका साक्ष्यतावनको भूमिने देखा और मध्यकालको साक्ष्यताकाको मानवताकाका स्थापनाके की। इतके बाद मध्यकालका विमितिने प्रमाण एक ग गय। सुतगीतर आचनिक दुष्टिगे सम्भार काय करनवालाय तर जात्र प्रियमन ह—पू इगलग पा० द्विज आचार्य रामचन्द्र सुबन दृ० प० आ० वाराणसीके ज्ञानर कामिज बु व प्रा० जग १०० पाठ्यपका नाम एक माय लिया जायगा। इत दगा विनेता मनीषिमान सुबगा-अध्ययनमालाको टेंग जमान दो है। हमन हमी प्रगतिमान और सम्भार परम्पराके प्रत्या वाकर गच्छ के विषय-सूत्राका सूत्रा ह।

मुघलकालान भारतके मध्यकालके अध्ययनमें हम बहुत-सा परनिर्माक धोचने गुजरता पडा ह। पूर मध्यकालका अध्ययन करनके भिन्न अरबी तुर्की ईरानी इतिहासकाराके प्रथम मुगल सम्राटाके स्मरण आईन अकबरी चित्र बला सगीत स्थापत्य तथा अय बलाके प्रमाणन और अध्ययन सामाजिक जीवन और धार्मिक धनना साहित्य और अध्ययनकाका अध्ययनको अगगा ह। हम समय पन्नामें हम मन्दिम इतिहासकार इगतामी सम्राटाका दृष्टिकान दत ह तथा सत भक्त एव सूत्रा आरि भारतीय साक्ष्य जीवनके स्था। वि ११ सामाजिक स्थापताका दाओं तहीं दे सत। अविन जनताके उम इतिहासको— जितमें मन्तु साराटो और रजवाहोंके युद्ध प्रम ईर्ष्या आरि का सगा सगा न होकर भागा गया और आचनित किया गया सत्र तथा दास्य सामाजिक दस्तावेज ह— सत भक्त तथा सूत्रा पण करते ह। इनके दृष्टिकान साम्प्रदाय या साम्प्रदायिक य विन्तु व ही सत्वाणीन भारतके वास्तविक मय इतिहासकार (इन्स्टारियाप्रणय) ह जिहान पुराणा और आचयानाका सगारा ककर भी जन इतिहासको नीव टाका ह। साहित्यिक माध्यमके लिए गय हम इतिहासमें राम भक्ति धारा कृष्ण भक्ति धारा विगुण भक्ति धारा गृफा साधना धारा आग्नि अथवा दृष्टिकानाम सम्राज तथा संस्कृति धनना तथा रुद्रिका भाष्य किया ह। हमन बवल तुनसाका हा आधार बनाया ह। इसलिये हमारा मध्यकाल अध्ययन मध्यकालके एक अथवाही एक (सिद्ध) संस्कृतिक एक साहित्य रूप (काय) का एक धाराके एक कबिपर कभीमत हो जाता ह। इसलिये यह मध्यकाल-अध्ययनगात्र का प्रारम्भिक भूमिका ही कहा जायगा यद्यपि हमन व्यापकता और ग राईन आयामाको उभारनको हर मुमकिन कागिन की है।

मध्यकालीन धार्मिक साहित्यके अध्ययनमें अत्यन्त आधुनिक हानपर हम बड़ी विगाल ऐतिहासिक परम्पराका धाराके लिए पराय हा जात है और अत्यन्त

पुनरुत्थानवाणी हानपर रूढिया और ऐतिहासिक पतनके प्रति भी मूठे गौरवका विभ्रम फलाने लगते हैं। इसके बीचमें चलनपर फिमल जानका मुतवातिर अदेशा कायम रहा है। हमन एतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोणको सहायता लकर इसका नया नयी निशाओमें पुन सस्कार तथा अतर रूपांतर (मेन्टेमॅरफोसिस) किया है। मध्यकालीन साहित्य तथा संस्कृतिके जनपथमें तीन प्रवृत्तियाँ लभित हाती हैं मध्यकालीनीकरण धार्मिकीकरण और मियकीयकरण। इन तीन 'करण' की बुनियात्पर हम कुछ सही लोचन पा सकत हैं। मध्यकालीन साहित्यमें धार्मिक भाषाका एक जटिल समस्या है क्योंकि वहाँ धार्मिक प्रतीकों और धार्मिक कर्म काण्डाक माध्यमसे स्वयंप्रकाश्य अनुभवका अवपण हुआ है। मध्यकालीन सौन्दर्यवाध शास्त्रकी भी अपना विशेषताएँ हैं जो काव्यशास्त्रीय परम्परान घोडा पृथक् और भिन्न भी हैं। मध्यकालीन साहित्यमें अभिव्यक्त पौराणिक चेतनाके आधारपर तत्कालीन एतिहासिक यथाथका संरचना करना भी एक दुर्लभ समस्या है और मध्यकालीन आध्यात्मिक चेतनाको तत्कालीन अनुभवगम्य यथायतासे जोडना भी एक अनूठा पहलू है। हम इन विपरीता और अन्विरोधाका यथा सम्भव सुनज्ञानकी चेष्टा करेंगे। इस प्रयासमें प्राप्त नय निष्कर्षों तथा अनुभवको प्रकट करनके लिए हम परम्परागत शास्त्रावलोक बजाय नयी शास्त्रावली गढ़नकी आवश्यकता सर्वाधिक महसूस हुई है। अतः हम अनन्त करण-प्रत्ययोंक द्वारा यह काय सिद्ध करेंगे।

सांस्कृतिक दृष्टि तुलसीकी सम्पूर्ण जीवनकी रचना और उसके आलोकमें उनक कृतित्वकी भीमासा करना लाजिमी है। बटुधा हमार मनमें जिस तुलसी की छाप डाली गयी है वह एक सत भक्तकी है तथा जिस प्रथका जड़ छाया है वह 'मानस' है। तुलसी प्रधानतया सत हो सकत है किन्तु इसके शाय-साथ व एक विमान, ग्रामाण उपभित वगैरे एक मनुष्य थे। इसी तरह मानस में उनका पुनरुत्थानवात् अपन चरमात्कपण है। बापमें 'हनुमान बाहुक' और कवितावली तब आते आते व वर्णाश्रम तथा अपनी आस्था विश्वासके सामने भी बड़ा सा प्रश्नचिह्न लगा देत हैं। यह प्रश्नचिह्न माना उनका निर्भ्रंतीकरण (दिस इल्यूजनमण्ट) और भारतके भविष्यका इगारा भी है। हमें तुलसीके आर्केटाइप' विम्बको उनके समग्र व्यक्तित्व तथा विविध कृतित्वकी पृष्ठभूमिमें समारकर साक्षात् करना हागा।

सारे मुगलकालमें दो ही व्यक्ति व्यापक इतिहासके प्रतीक हैं अकबर और तुलसी। व्यापकता दूरदर्शिता, भारतके महत् भविष्यके प्रति झिलमिलाते स्वप्नों का साकारिकरण विराट जनताके स्पष्टता और शाक यथायका गन गन लोक

भूमिगत अंतर्गत इन ही क्षेत्रों का गान्धर्व था। जब न जाने इस सामंजस्यीय
संरचना का पुराना सामाजिक षटकार का प्रतिनिधि मान सकते हैं। जब रीति
योग एक मूल स्थापित करने में सिद्ध इतिहास और समकालीन विचारों का
सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग। इतिहास या सांस्कृतिक और सांस्कृतिक
नामों का प्रयोग सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग है। अथवा सांस्कृतिक प्रयोग और उत्पत्ति
है। यह सामाजिक सांस्कृतिक षटकार तथा उत्पत्ति सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग
है। सुसंगतता का प्रयोग इतिहास-शास्त्र (सांस्कृतिक इतिहास) का
दूसरा आवृत्ति भाषा है। यदि उनमें वैदिक सांस्कृतिक और सांस्कृतिक
भाषा है। सांस्कृतिक सांस्कृतिक और सांस्कृतिक भाषा है। यह
सामंजस्यीय सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग है। यह सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग
संस्कृतिक एक भाषा है एक भाषा है और सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग।
आइए हम सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग सुलगा और उनका प्रयोग सांस्कृतिक
भाषा का प्रयोग।

■ ■

• विषय-सूत्र

पहली गोष्ठी

‘ गुप्त प्रगट इतिहाम पराना (णा) ’ —अर्थात् तुलनाक पौराणिक अर्थात् मिथकीय काल और एतिहासिक कालक कौन स आयाम थ । १

दूसरी गोष्ठी

‘ रामायन अनुहरत मिश्र जग भयो भारत ’ रीति अर्थात् तुलसीन समाजका मुगल रगमच कसा पाया राज्य संचालनके क्या प्रतिमान बनाय, तथा राजनतिक ज्ञानक कौन स स्वप्न दख । ६३

तीसरी गोष्ठी

एस का एसो भया कबहूँ न भजे बिनु धानर क घरबाहूँ अर्थात् तुलसीकी आत्मकथा क्या थी उनक विचार तथा जावनदृष्टियाँ क्या थी कतिरक क्या था और उनका सृजन काय क्या था ? ११७

चौथी गोष्ठी

‘ काउ कह नर नारायन हरिहर काउ अर्थात् तुलसीकी पात्र रचनाकी तकनाक क्या ह ? उनक चरित्रकी रचना कसी ह ? उनक गालनिरूपणमें विचार एव ‘ काय का रसवादा ग्रास्त्रवादी भूमिका कया ह ? १७६

पाँचवीं गोष्ठी

दखत तव रचना विचित्र नव समुझि मनहि मन रहिए अर्थात् तुलसीक क्या रूप क्या ह ? उनका शिल्प विधान क्या ह ? उनमें किन किन तकनाका

हिन्दोकी नयो बौद्धिकतावादी
परम्पराको—

पहली गोष्ठी

“गुप्त प्रगट इतिहास पुराणा” अथवा तुलसीक युगमें पौराणिक अर्थात् मियत्राय काल (मियत्र टाइम) और ऐतिहासिक काल (हिस्टोरिकल टाइम) का कौन से आयाम थे !

अपने बचपनमें रामनाला नामधारी तुलसीदास भारतीय मध्यकालके दाते मान जा सक्त ह । भारतना मध्यकाल बहुत लम्बा ह जहा अनेक स्थानी और ममयामें काफी विभिन्न प्रकारा एव स्तरोकी सम्पताआका समावण ह । यह हिन्दू-काल तथा मुस्लिम कालमें बाटा जा सकता ह । हिन्दू कालमें भी बाहरी जातियाके आक्रमणालिके सफटाके बाद गुप्तका साम्राज्य पल्लवित हुआ था और काशिकासे कविन रघुवण रचा । मुस्लिम कालमें भी मगला तुलसी अथवा आर्थिक आक्रमणादिके सफटाके बाद मगल बाणाल अक्षरका साम्राज्य पल्लवित हुआ था और तुलसी-जसे कविन रामचरित मानस रचा । रघुवण के पहल ऋषि वाल्मीकिकी रचना पूण हुई थी तथा मानस के पहल कविमी गुप्तनाम मुनिन ‘अध्यात्म रामायण रचा थी । इस तरह भारतय मध्य कालमें रामवृत्त एक नयी सामाजिक चुनौतीका पज रत्ता ह । तुलसीन मुसलिम मध्यकालमें हिन्दू मध्यकालके स्वप्नाका प्रस्तुत किया ह तथा हिन्दू मध्यकालके आदर्शको मुस्लिम मध्यकालके हिन्दू जनजीवनकी तुलनामें परखा भी ह । इसके अलावा तुलसीने कविमे अधिक एक सन्त एव भक्तका दृष्टि काय रचना की ह । उहान अक्षर जहागीर कालमें जीवित रहते हुए एक मियत्र कथाको

१ पूर्ण किताबमें श्री सद्गुरुसरण अवरथ द्वारा सम्पादित ‘रामलला नन्द्य ।

(अ) (तुलसी के चार ल भाग २) को छोड़कर तुलसीकी जिन अन्य पुस्तकोके सम्बन्धमें लिखे गये हैं वे गीताप्रेम गारखपुरके प्रकाशन हैं ।

(ब) ‘मानसमें स भौका क्रम इस प्रकार है २।१।२।३।४।५ - यहाँ पहली मगल कालका दूसरा दातेका, एव बादकी सरवाएँ पूर्ववर्ती दोके आगेका चौगाथीका निर्देश करती हैं ।

पहली गोष्ठी

“गुप्त प्रगट इतिहास पुराता” अथवा तुलसीक यगमें पौराणिक अथवा मिथकाय का (मिथक टात्म) और पत्रिकात्मिक का (मिथक टात्म) का कौन-न आयाम थे ।

अपने स्वप्नम 'रामचरित' नामधारी तुलसीदास भारतीय मध्यकालके दान्ते मान जा सकते हैं । भास्वका मयनाल बहुत लम्बा है जहां अनेक स्थानों और समयमें काफी विभिन्न प्रकारा एव स्तरोका सम्भोजाका समावेश है । यह हिन्दू-काव्य तथा मुस्लिम-काव्यमें बाटा जा सकता है । हिन्दू-कालमें भी बाह्य जातिवाक आक्रमणादिके सङ्घटकों बाट गुताका साम्राज्य पल्लवित हुआ था और काव्यात्मक जमे कविने रचुवा रचा । मुस्लिम-काव्यमें भी मगाला तुका अथवा आन्विक आक्रमणादिके सङ्घटकों बाट मुगल वाङ्माल अकबरका साम्राज्य पल्लवित हुआ था और तुलसी-जमे कविने रामचरित मानस रचा । रचुवा के पहल ऋषि वाल्मीकि रचना पूण हुई थी तथा मानस के पहल किमा गुप्तनाम मुनिने 'अध्यात्म रामायण' रचा थी । इस तरह भास्वाय मध्य काव्यमें रामवृत्त एक नया सामाजिक चुनौतीका पुज रत्त है । तुलसीमान मसलिम मयकाव्यमें हिन्दू मध्यकालक स्वप्नाका प्रस्तुत किया है तथा हिन्दू मध्यकालक आत्मीको मुस्लिम मयकालक हिन्दू जनजीवनकी तुलनामें परमा भी है । इसके अलावा तुलसीमान कविस अनेक एक सन्त एव भक्तका दृष्टिस काय रचना की है । उहान अकबर जगादीर-कालम जोवित रत्त हुए एक मिथक-कथाका

१ पून वितावमें श्री मद्गुहरारण ऋषि दारा सम्पादित 'रामयना नददू' ।

(अ) (तुलसी के चार ल भाग २) का अकबर तुलसीको जिन अन्य पुस्तकों स सम्भिये गये हैं वे गाताप्रेम गारखुरके प्रकारान हैं ।

(ब) 'मानस'में स 'भौका क्रम' इस प्रकार है १६५२१४ ६ - यहाँ पहली सन्त काव्यका दूसरा दादेका, एव बादकी सत्याप पूर्वका दा के काव्य चौसठथीका निर्देश करता है ।

पहली गोष्ठी

वाणी तथा विध्वंसवाणी दृष्टियाम काफ़ा लिखा जा चुका है। इसलिए इन्हे आध्यात्मिक और अलौकिक आस्थासे अलग करके समाजशास्त्रीय तथा सौंदर्यशास्त्रीय धरातल पर अंकित करने पर हमें कई जगहिल गांठा और ज़रूरत चुनो नियाज़ा सामना करना पड़ेगा। हम आचार्य गुल्का लोकमगलकी परम्पराको द्वन्द्वात्मक समाजदानका िगा देनकी कागिग करेंगे।

विश्व सस्कृतिकी रचना अतमुखा तथा वहिमुखी प्रयोजनाक लिए होती रही है। यह रचना उत्पादन और सृजन-द्वारा हुई है। हम गुहमें ही यह मजूर करते हैं कि मानव इतिहासकी गतिमें कोई भी समाज-प्राकृतिक-एव मानवीय सम्बन्धोम कट नही सकता और कोई भी चितन समाजका पराश्रय या प्रत्यक्ष आकल्पन किय बिना प्रकट हो नहीं हो सकता। हम यह भी स्वीकार करना होगा कि राष्ट्रीय इतिहासकी रचनामें सत्य निष्पन्न नहीं रह पाता और प्रत्येक इतिहास अपनी भौगोलिक सीमाओंका वजनस साधोपाग मानव इतिहास नहीं हो पाता। पुनश्च हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि भौगोलिक एव राष्ट्रीय इतिहासम भी मानवतावादी या अध्यात्मवादी या बौद्धिकतावादी विश्व दृष्टिकाण भा निहित होता है। किंतु क्या विश्व सस्कृतिको मध्यकालक कुठ एस सावभौम तत्त्व भी है जिहें प्रत्येक राष्ट्र अपनी विविष्ट सामाजिक अवस्थामें ऐतिहासिक निश्चयताक मताधिक धारण करता है? यापक रूपस कुछ एसे तत्त्व है। किन्तुहल हम अपन निरूपणका सामाजिक सम्बन्धो और मध्यकालीन आदर्शों तक सीमित रखेंगे।

पूर भारतीय मध्यकालक समाज सस्कृति कला धम दशन कानून आशिका मूलाधार भूमि यवस्था रही है। सामंता और सूबदाराने इस यवस्थामें राजनतिक तथा आर्थिक शक्तिको अपन अधिकारम रखा है और कृषकाका हमेशा शायणका शिकार रहता पड़ा है। यह सामन्ताय यवस्था कुछ ऐसी थी जिसम दुबल शक्तिमानाकी सेवा करते थे तथा यह शक्तिके त्तिम था कि वह दुबलाकी रक्षा करे। इन मरक ऊपर सम्राट था जा कृषानिधान शरणागतवत्सल और समन्शी पिता आशि हाता था। इस सामंती यवस्थाम सघ और पचायत, गण और साम्राज्य मामत और सूबदार कृषक और गलाम राजसभाओंके कवि और लोककवि किसाना और यापार राजसभाओंके प्रेम तथा राजसभाओंका साहित्य और लोकजीवनक प्रेम तथा लोकसभाओंका साहित्य इत्याशिकी िगाए मिलती है। मुसलिम मध्यकालकी कुछ नयी विगेषताए भी मिलती हैं जम लोकभाषाओंका विकास यापारिया और कारागराक वर्गोंका अम्युन्य दशिनस उमरकर उत्तरमें फरत हुए भक्ति आदालनका जनजावनमें प्रवेश

विरहित अतीतमें प्रभविता करता है तब वह ऐतिहासिक आदर्शोंकी भूमिका बन जाता है। मध्यकालीन समाजक मनुष्यक लिए सस्कृतिका सम्पूर्णताका प्राप्त करना सम्भव नहै था और न ही सामाजिक परिस्थितियाक आधारपर उस सस्कृतिका क्रमिक विकास जात था इसलिए एक आत्मापूण अतीत ही पहला युग हुआ, और पहला युग स्वर्ण युग ही गया। इतों कारणम ऐतिहासिक आदर्श 'विगुद्ध खुशहाली (हृषानस) क रूपमें प्रतिष्ठित हुए। अतः मध्यकालीन अतीतविराधा तथा सामाजिक अन्वकारक कारण पहला था य भौतिक इन्ड्रीक खुशहाली आदर्श युगा-युगा पहलक और दूर सुदूर लानाक आत्मा बन वामें य मात्र धारणा हा गय अतः प्रासिक लिए जीवनक बचनान छुटकारा पाना (माक्ष) और अमरत्व पाना (स्वर्ग प्राप्ति) लाजिमा हा गया। साराणमें, इन्ड्रीक विपमता पारलौकिक खशहालाम भटक गया। इसीक साथ रहस्य, पलायन, इति कमकाण्ड आत्मीक मिथ्या चतनाण भी उठ पडा।

मध्यकालीन समाजको यापक निरात्मापूण जन दगाआम यह विगुद्ध अतीत पारलौकिक खुशहालीमें बनल गया। इसक लिए सम्पूर्ण त्याग तथा सम्पूर्ण ज्ञान हा धारणात्मक आत्मा हा गय। साराणमें समाजका दरिद्रताको ही आदर्श रूपम प्रतिष्ठित कर दिया गया। सभी प्रकारक लौकिक बचनान मुक्ति तथा सभी प्रकारका आमकितयान विराग आत्मा इमा दरिद्रताक आत्मीकरणक आध्यात्मिक पहलू है। त्याग और दानका पालन एक नितात कठिन किन्तु सर्वोच्च आत्मा हा गया जिसक प्रताक सत मुनि भक्त ऋषि आत्मीक चरित्र हुए। इस तरह वास्तविक खशहालाका आत्मा सत्ताप तथा त्यागक आदर्शमें आच्छातित ही गया। सभी परित्यागका असामाजिक परिणति महसुसा और नाराक निपचमें भा हुइ।

दूसरी िगा चरवाही सस्कृतिकी रही। यह बहुत कुछ व्यक्तिगत भी थी। इस आत्मामें मन्त्र सरलता और सत्यका चरम माना गया। हममें सुख (प्लजर) तथा प्रवृत्ति (नखर) क लिए सस्कृतिका सामाजिक लाकमयाणाआ आत्मीक परिदण कर िया जाता है। इस मस्कृतिमें क्राडा तथा लीलासी प्रधानता है। इसमें प्रेम और भाग शृंगार, बगियाँ और वन बियाँ आत्मीक स्वर्गिक सुखोपभागना तक रचते हैं।

तिसरा िगा गूरनायकाक आत्माको है। जब मध्यकालम भी ज्ञान ज्ञान आदर्शात्मक अतीतक साथ साथ वास्तविक अतीतकी स्मृतिया चुन लगती है तत्र आत्माकोका योग अत्रिक मूठ और बाधगम्य हाना पडता है। इस तरह सामाजिक मानवाय आदर्शोंके साथ-साथ विगुष्ट ऐतिहासिक आदर्श भा जुट जात

विरहित अतीतमें प्रभूषित करता है तब व एतिहासिक आदर्शोंकी भूमिका बन जाती है। मध्यकालीन समाजक मनुष्यके लिए सस्कृतिका सम्पूर्णताका प्राप्त करना सम्भव नहै था और न ही सामाजिक परिस्थितियाके आधारपर उस सस्कृतिका क्रमिक विकास नात था इसलिए एक आत्मपूर्ण अतीत ही पहला युग हुआ, और पहला युग स्वर्ण युग हो गया। इन्ही कारणोंसे एतिहासिक आदर्श 'विशुद्ध खशहाली (हपीनेस)' के रूपमें प्रतिष्ठित हुए। लेकिन मध्यकालीन अतीतविराधा तथा सामाजिक जनकारके कारण पहले तो ये भौतिक इहलौकिक खुशहालाके आदर्श युगा युगा पहलेके और दूर सुदूर लोकिक आदर्श बन जाने में य मात्र धारणा हो गयी जिनका प्रासंगिकताके लिए जीवनके बचननासे छुटकारा पाना (मोक्ष) और अमरत्व प्राप्त (स्वर्ग प्राप्ति) लाजिमा हो गया। साराणमें, इहलौकिक विपन्नता पारलौकिक खुशहालामें भटक गयी। इसीके साथ रहस्य, पलायन, हठि, कमकाण्ड आदिकी मिथ्या चेतनाए भी उठ पडी।

मध्यकालीन समाजकी व्यापक निराशापण जनदशाओंमें यह विशुद्ध युगात्मी पारलौकिक खुशहालीमें बदल गयी। इसने लिए सम्पूर्ण त्याग तथा सम्पूर्ण दान ही धारणात्मक आत्मता हो गयी। साराणमें समाजका दरिद्रताको ही आत्मिक रूपमें प्रतिष्ठित कर दिया गया। सभी प्रकारके लौकिक बचननासे मुक्ति तथा सभी प्रकारकी आसक्तियामें विराग आदि इसी दरिद्रताके आत्मिकरणके आध्यात्मिक पहलू हैं। त्याग और दानका फलन एक नितांत कठिन किन्तु सवाच्च आदर्श हो गया जिसके प्रतीक सत मुनि भजन ऋषि आदिके चरित्र हुए। इस तरह वास्तविक खशहालात्मक आत्मता सत्ताप तथा त्यागसे आदर्शोंमें प्रतिष्ठित हो गया। इसी परित्यागका असामाजिक परिणति गृहस्था और नाराके निपवचन भी हुई।

दूसरी शिवा चरवाही सस्कृतिकी रही। यह बहुत कुछ व्यक्तिगत भी थी। इस आत्ममें सहज सरलता और सत्यका चरम माना गया। इसमें सुख (प्लेजर) तथा प्रकृति (नचर) के लिए सस्कृतिकी सामाजिक लाकर्मयोगिता आदिका परित्याग कर लिया जाता है। इस सस्कृतिमें क्रांति तथा लीलाकी प्रधानता है। इसमें प्रेम और भाग शृंगार बगिया और वन विषा आदि स्वर्गिक मुखोपभागका लाक रचत है।

तासरी शिवा गुरनायकात्मक आत्मिकी है। जब मध्यकालमें भी गन गन आदर्शोंके अतीतके साथ साथ वास्तविक अतीतका स्मृतिया जुन लगती है तब आदर्शोंकी योगिता अधिन मूल और वाचगम्य होना पडता है। इस तरह सामाजिक मानवोप आदर्शोंके साथ-साथ विविष्ट ऐतिहासिक आदर्श भी जुड जात

ह । अन्तर्गत परिवारांत निष्ठागमें अगाधत्व सर्वांत एतिहासिक मामलात वास्तविक जोगते आधार हात है । गन्तायत मन्वृत्तिकी सम्पूर्णता (अनीतरी सम्पूर्णताही अर्थमा) का पारण करना है । यत् जगत् और मन्वृत्तिकी तथा तथा रणाव लिंग स्मृत हाता ह । यत् गणपती तथा गुजोतभागरी अगाध स्थािता और गणनागतारा तथा वा घम विजयत अहित अनुमानित हाता ह । वरवाय घराया भा हाता ह । यत् अन्त रिंगा अगाधरी प्राणित रिंग ल्प करना है और प्रण बहुधा गुण गुणियाभावा परिचाय करानात हात ह । कमानभी ता वह जगतरा भा परिचाय कर दता ह । अत वत् आमच्यामी होता है । कई बार हत आमच्यागत कर्ममें प्रणयरा कर्त्त गीयतरत आगा हा हाता ह (जय ज्ञापनीरा पद्मावता दातरा वातानुभावा) और प्रमरी विमो प्रनिश्चिन्ता (स्थयतर अपहरण करण भा) में इनरा उद्गम भा हाता ह । गन्तायत विता गीयत करतयरा प्र गित करतरा आरगावत् ही जानरी वाडा लगा सकता ह । एम प्रकार गणायकवने आगा हा रागभाभा वे जावन प्रण्य गीतारी अभिन्त्यजना तथा एतिहासिक नायकात अका अाि प्रदान करत ह । कानि सम्मान और प्रनिगाय और इनरा सन्वर्ती गामाग एव करण्य हा गीययगत चरम म्य ह । गणशरमें परिचाय और गुणाभागत दानारा तथागत हाता ह । इन कारणगत मध्यकालमें बहुधा गणबीर ही राष्ट्रीय आर्गों और एतिहासिक विम्बना धारण करत ह । गीय-सास्वतिक जाँ वरण की प्रवृत्तिका चरमालाप हाता ह । एम चरणमें आकर दवानायकाकी मूर्त ही जाती ह तथा गूणायतरा ज म हाता ह ।

भारतीय मध्यकालव भक्तिसाहित्यम देवता हा चरितनायक तथा चरनायक हा गय ह । इतिहास स्वताभारा आध्यात्मिकता और चरितनायकरी आ गाम कतावा अनूठा सवाग हभा ह । अवतारवा मध्यकालीन साहित्यकी महत्तम उपलधि ह (एसावा विवचन यथास्थान हागा) भक्तिसाहित्य प्रधान मध्यकालीन चरणमें रामवृत्त और शृण्वृत्त अवतारवादी प्रामाण्डलस पूणत आलोकित हो उठ । व वृत्त प्रमण प्रसार और द्विविनि साधना और सिद्धि सधय और उप भोग व अपसारी शक्ति (सङ्गोपयुगल फोस) और व । भितारा गति (सङ्गापाटल फास) वलितता और रागष्टिकताके सकतक ह । जब जब समाज या कवि जिनक वलितमा रहा ह तब तब सख्त और भाषा-वाक्याम रामवृत्त तथा जब जब व जिनक अतमन्वी रह ह तब-तब शृण्वृत्तवा प्रमुक्त हुआ ह । जयवर्गमें इन दाना वृत्तकी सधि हुई ह कि तु उनकी वृत्ति गुताम भोगवाली ही रहा ह । उहान प्रस नराधव एव गीतगाविन्द बोना लिख ।

इन धृत्तोंकी विनोप दिगाभाका एक प्रमाण यह भी ह कि दक्षिणपूर्व गंगिया—
मुमात्रा कम्बोज चम्पा, बाली जावा, म्याम आदि—में उस गय भारतायाको
काणकी अप रा दिग्विजयो रामन और उनक साथ शिव एव बुद्धन सामाजिक
दपण प्रदान किया। सधपमें सत्यके विजयो राम यवस्थाके प्रगान भगल
प्रतीक गिव, तथा दिग्विजयके घाट गान्ति एव वरुणा एव मनाक प्रसाक बुद्धन
मिलकर समाज गान प्रस्तुत किया। वहाँकी सामाजिक दशाभमें राम बुद्ध
शिवका त्रित्व कायम हुआ। आश्चय यनी ह कि वत्तर भारत म काण उसी
प्रकार भलाय गय ह जिस प्रकार भारतवपमें बुद्ध। इसमें क्या आश्चय ह कि
अकबर जहागोर काभमें तुलसीन राम और शिव (वीरता और भगल) का सम
वय किया। वीरताका आत्मा श्रियाक लिए तथा सयास प्रधान कायाण
(शिवत्व) का आदग ग्राहणाक लिए प्रस्तुत हुआ। अतएव तुलसान एक अलिखे
इतिहासकी सास्कृतिक आवश्यकताका कई सदिया वाद जोता ह। काण और
गिव दाना ही नृत्य तथा भासक त्वता ह। पहला नटनागर ह दूमरा नटराज।
दोनाक साथ योग भी जुटा ह। कायामें काणका यागी एव भागी रूप और
गिवका योगी तथा सतोपी रूप उभरा ह। तुलसीन - जिह न भोग मिला न
प्रेम न याग जा कमयागकी ही साधना करते रह तथा एक भदे समाजमें
यत्रणाए सहत रह - रामको मर्यादा पम्पोत्तम समाज-सस्थापक सम्मिलित
कुटुम्बको टूटनसे बचानवाले, एक पत्नी-व्रत पतिक रूपमें उभारा ह। किन्तु
सामंतयुगीन विलासी सस्कृतिकी कुलीनता तुलसीके अनुकूल नहीं थी। सर्वेक्षण
करनपर पता लगता ह कि रामानुजाचायकी चौहवी पीलीके गिष्य राषका
नत्थ। उनन चचे रामानत्थे। ये दोना बरागी थ तथा निगुण सगुण मागके
सन्निस्थलपर खत्थ। इसीलिए रामानत्थक गिष्यामें एक ओर कबीर दादू आदि
हुए तो वसरी ओर नरहयानन्द भी। कहा जाता ह कि तुलसा नरहयानत्थके चले
ह। तस तरह तुलसीमें भी दानिनर अन्तविरोधाका पुज समाविष्ट हुआ। व
भा सयामियोंकी तरह धुमत्तू ह। उनमें परिवारको नकारनेकी प्रवृत्ति ह। उनमें
गबरका अद्वतवात् भी ह ता रामानुजाचायका विगिष्टान्तवाद भी। व गवाकी
भी सहायता मागत ह। इसीलिए तुलसीम दाननका कई तख नुकीली धार नहीं
ह जिन तरह कि पुष्टिभागी बबियामें ह। कवीक निगुण राम तथा तुलसीक
दागरथि राम दाना एक ही आचाय परम्परास प्रफुटित ह। केकिन एसस अधिक
आश्चय (समाजगास्थाय परिस्थितियाकी दृष्टिम नही) क्या होगा कि वाभमें
रामभकिन परम्परापर भा श्रगारिकता हाथी हो गया। हमका एक कात्तम
कारण यह भा हा सक्ता ह कि सूरज समाजके धर्मोंको नही छुआ और तुलसीने

कराका नियामन करती थी। वण-यवस्था मारे सामाजिक सम्बन्धों का लक्षण (मिनिचर) होता थी। परिवार राठी वगैरह सा सम्बन्धोंकी घुरी था। पचायतें सब-भय भावपर वणाश्रम व्यवस्था लक्ष्मणा तथा व मयापर, और परिवार नाना प्रकारक मधुर सभ्य वात्मय आत्ति भावापर आश्रित थ। मध्यकालीन सभ्यता गान धमगात्र वगैर और साभ्य गाना भानिम वहीँ तीन क्षेत्रां आत्ममूलक और यथाथमूलक रामराय तथा बभ्रुमूलक और विका तथा नरमूलक स्थापन करत रह ह। परिवारस ग्रामरा आर प्रसारित होनेवाली सामाजिक गति ही वनापसारी ह तथा परिवारम व्यक्तिक सम्बन्ध का धार अभिमार करनवाली सामाजिक गति ही वनाभितारा ह। वनापसारा गतिका क्षेत्र पचायत और वणाश्रम व्यवस्था ह तथा वनाभितारा गतिका क्षेत्र परिवार और उषक सभ्य जम पति पत्नी पिता पथ भाई वनि सास बह सबी मखा माता-पुत्र प्रिया प्रिय डयात्ति।

ग्राम तथा परिवारको ग अन्तम अवस्थान चलीतिपा मिलीं। एक ओर नाया मिद्धा (जिनकी परिधिमें लाकु गव, को भरव कापालिक आत्ति भा गामि ह) न वमयाग तथा सायनाका ह्य वनाया। उहान वणाश्रम यवस्था तथा परिवार यवस्था दानापर कगकर चारें का। परिवारका वार्त्तिका खणित करक स गान योन सम्बन्धमें उच्च खता ला ग और रागाभन वृत्तिक कोम तनु तोयन मौन्य समाप्तप्राय कर गिया तथा प्रेमक उपात्तीकरणका काई रास्ता नही छाग। उहान वणाश्रम यवस्थाका गणन करक सामाजिक अनुगामन ध्वस्त कर दिया। व स्वयका जनममम अग समयत थ और जनता का वायगम्य भाषामें वारें नहीं करत थे। उनकी भूमिना ध्वसात्मक रनी। व पचायत वण तथा परिवारक स्थानपर को विनय न। पाय। किन्तु उनस एक ग पाय भा हू उहान वाके निगुण साभ्यको वन्त अधिक प्रभावित किया और ममाजका रिया और वाह्याम्बरामें उचनका ना उग्र विराय किया। दूसरा चुनौता इमगमका था। सबी गतामें मुसमान अपना नयी सभ्यता नया धम नयी जावन पद्धति कर आय और उहोन एक क्रान्ति उपस्थित कर ग। गमें ता उहान भारतकी सामन्तीय व्यवस्थाका ढाँचा ग गगना किया था गनिन कालांतरमें ध भा मूखार गपक, सामन और व-व उमीनार हा गय। उनका चुनौता वर्णाश्रम-यवस्थाका था। सामाजिक गयात्मकतान दो सभ्यताका अंतरावन्धन गुन कर गिया। वार और जायमाने क्रम निगुण मागमें भक्ति और इस्लामका वटुरतामें मूफा वनातका मत कराया। व तत्कालम नूय। एक आर उ होन सबको अन्तयताका विनाग किया ता

दूसरी ओर मंगलमार्गीक धाराओं उपाह वि। जापमान आगिपातो प्रमयोगी बना दिया। जानीय आमारी पार तथा प्रमरी पीरन आमारिप तथा गानिप दन्ति तथा दमित वि गुगलमा कपकातो एन यदी गहज गापता और निमल रहान वि महात् उपातोरण प्रगुण विमा। विपु गापन्याय हीवा कर्ण बरला ? एन बरल कग मरता मा। अत गुनदी और गुरत माप्यमव सामाजिक पत्किपारा विप्राओं वप शुभ विमा। परिवार कर्णयम तथा पवायन इन तीनाहा पीरागिनीरण या मिर्णोकरण तथा आर्णोकरण हा गया। समाजक मार गम्बध - विप विमा पनि कनी विना मी गता स्वामी मरत आदि - परमापमग गइ गये। हा सम्बधान कारण ही बल सगुण हो गया। अत एन मातृ भी हो गया। मरता इनरो व्याप्यता पारम्बार की ह। मायाक सत्त्व रज तम तामव गुण निराहार निविचार ब्रह्म निहित हो गय। पारम्पर्य भक्ति अविना ग री और गगुण बलरो अतासा अग रूप जीवामें विगतरन वि कभापक वि गृष्टि की बरलत ह। यी आमरति अवनार ह। इन तर पोररजा और लोररण स्वीयम दृषा - नय अर्थोम। सागारिक गुभाता प्रमभाव भगवतप्रम अघात प्रग में आगतलि हा गया और सामारिक गतामा दाम्य भावमें आर्णिक हा गयो। ता बेन पसारी गति लोररण मरक ह जोर कभाभिगारी लोररजा मरत। लोर दोनाम मरत हा गया।

एक रामगुता कविपान परिवारकी इकांमि ग्राम इतार्का आर वन यदवस्थाकी आर धारा की। एन कविपान परिवारक सगुनर वि व्यक्तिगत सम्म धोके आदग वि - विगण रूपम विनागुन और पनि पनीक आग। यह इनकी गम्भात थी। ग्रामाण स्वाम्योर सगुनर लिए इतान इन आग गम्मित परिवारवाणी स्वाम्यानी हो आग वण व्यवस्था रचनर लिए अभिमन्त्रित विमा। एत तरह एक आग ग्राम्य व्यवस्था और एन आग परि वार गठनके तारा एन तत्कालीन समाजकी एसी धनापिया दो जर्ण लाक मर्याना एव बदमर्या ही मर्वोरि ह। य कवि भी काई विगण नही दे सक वरत एतिगसिक वास्तविकताका पीरागिक आगम उदात्तीकत कर सवे। इतान रचकका राजा पिता जोर स्वामी बनाकर उग स यास तथा गीय दानाम परिपण विमा। एत तर सामाजिक कभापसारी गन्तिन परिवार और ग्रामकी बाह्य अनियाकी सास्वतिक और अगुगतनिक व्यवस्था ना। यही वि गील की प्रधानता रनी।

दूसरी आर कष्णवृत्तक कविपान परिवारकी इकांमि आरम्भ करके

व्यक्तिक सम्बन्धी आर अभिसार क्रिया । व ग्राम (सामाजिक इकाईके अर्थमें) का ओर उन्मुख नहीं ही हुए । इहान परिवारक अन्तर एक आन्तरिक स्वायत्त (इण्टरनल ऑटनमी) को स्थापित किया । यह स्थापन काफी रोमण्टिक और भावकल्प मूलक रहा ह । अत यहाँ लोकमयागा और वनमयागाका त्याग विधय ह । प्राकृतिक अचलाका स्वच्छन्द जीवन, आभोर गापाकी निवृत्त चरवाही चयाएँ तथा प्रेमम सभी कुण्ठाआका परित्याग कष्णवत्तन प्रयाजन बन । नृत्य, भाग रास मिलन विरह प्रणयलीलाएँ आन्तिके द्वारा कष्णभक्तितन रागमूलक प्रेमको निवाधित भुक्ति दकर व्यक्तिक मनस्तात्त्विक जीवनको सक्रम प्रिययाका उदात्तीकृत किया । यहाँ परकीया प्रेम भा सहज हो गया अभिसार और सभाग ब्रीडाएँ हा गयो । इस वृत्तक कवियान रजकना प्रेमी पति सखा बनाकर उसे भोग और सौन्दर्य दानास परिपूण क्रिया । इस तरह कद्राभिसारा गवितन परिवार और व्यक्तिक जीवतका अदरुना दुनियाका रामण्टिक तथा भागात्मक स्वच्छन्ता दो । यहाँ नृत्य सौन्दर्य का प्रयानता रहा ।

अत इस कालम रामवृत्त और कष्णवत्तका पुनश्च एक समानांतर विकास तत्कालीन समाजके अन्तर्विराधाना ही प्रतिबिम्ब ह । समाजन सुरक्षा मकनिश्चमेके द्वारा नाथा सिद्धा और ममन्मानाकी चुनौतियाका प्रतिबाधन क्रिया । सामन्तीय व्यवस्थाकी सीमाआके कारण ये कत्रि कसा अय समाजका विकसन (आल्टनेटिव) ता नहीं द सक किन्तु मर्यादा तथा उन्मुक्तिक बीच गीत सचालित एक सन्तुलन कायम करनमें काफ़ी मफल हुए । अत रामभक्ति गाखान ग्राम काइया एक परिवार इकाइयाको सगठित क्रिया तो कष्णभक्ति गाखान परिवारक आन्तरिक सम्बन्ध घोमें स्वच्छन्ता ला दा । भक्त हानक कारण इन कवियान गूर-वीरोके गवित गील-सौन्दर्यके चारित्रिक मूल्याक आगे नृत्य विगपण लगा दिया क्याकि इनके नायक पुरुषात्तम थ । समाजगास्त्रीय दष्टिय गवित गील सौन्दर्यक मूल्याका रूपांतर कई नय तथ्य उद्घाटित करता ह । सौन्दर्यका लें । कष्णभक्ति काव्यमें नारियाँ रूप लावण्य गाभा सयुक्त ह जब कि रामभक्ति गाखामें पुष्ट ही मन्तका उजानवाले ह—मीता रामपर गूपणखा लम्भणपर तारा बालिपर रोषती ह । यहाँ नारियाँ दवियाँ = दवी सौतानी सविकाएँ तथा मखियाँ । कष्णभक्ति गाखाम नारियाँ अभिसारिका गापियाँ कामचतुरा दूतियाँ ह । रामभक्ति काव्यमें नतिक्षताके प्रबल आग्रहाने कारण नाराजना पूण सौन्दर्य चित्रण—विगपत नल गिन बारहमासा या पटन्तुक् याजस—लगभग नगे हा पाया ह (दीपगिता सरस्वती आन्तिके रूपका छात्कर) । किन्तु कष्णभक्ति काव्यमें नारा-सौन्दर्य हा छत्कर छत्ता ह और क्रमश मामल एक

भोग प्रधान होता था गया है। इसी क्रम में कृष्णभक्ति का भी परभाव प्रम
 प्रधान है ता रामभक्ति का अर्थ स्वर्गीय प्रम कृष्णभक्ति का अर्थ भक्त
 युवतिया (जायात्माआ) के साथ रमना करता है अर्थात् रामभक्ति का अर्थ
 राम उराना नृत्तिर पूजापाना अर्थात् पूजा करना है। कृष्णभक्ति
 का अर्थ राधाका गान्धिका विरह यादु का गया है जबकि रामभक्ति का अर्थ
 उर्मिका विरह तथा साता विरहका धाग उत्तरगा कर दानी का है। गाला
 से। कृष्ण पूजापान तथा यागा भागा गु म्य तथा विषय हाकर भा लात्मापुत्र
 तथा भगवान् है। भक्ति गा विषय य कापानया विचार यपक ही अर्थात् हू
 है। बायक हानपर यगापान य पाय यादा यद हानपर यगापान गाय और
 विचार हानपर गानिका एव राधाक य साथ लोलाए करत है जो समाजका
 यगापानका भजक है। किन्तु बायक रामका लाला यहा कम आ पाया
 है (गातायला म याडा विस्तार है)। युवक हान हा य समाज मगनर निमित्त
 तथा मर्या ए कायम करनर त्रिण रयाग तथा मयपका जीवा म कर दा है।
 य पूण पुत्र्य नी मयाग पर्यात्तम है। बायक कृष्ण ता यादा-युन रागाग
 लक्ष भा है अर्थात् परवर्ती कृष्ण प्रणयताका आम लिखत लोन हा जात है। यान
 राम प्रमनतापयक अन्ना समय विमान है किन्तु विचार हात ही य दानया
 तथा दानयनास जन्म गन है। इसा तरह नारियाके राधा गानिका दूतिका
 आदि समाजक गणन नही चलती। य अभिगार मयाग तथा रामक वि
 आजाद है। किन्तु साता उर्मिका ययका आदि समाजक लोला तथा
 अत्याचाराका झलती है और मर्याताका लपयाम विरतर लगता है। इसा तर
 धनिका या गौयका से। कृष्णभक्ति का अर्थ प्रगा नारिका जीवामाम अधिक
 कृष्णकी माग जपनवाको माग विद्यागिता रमणिका है किन्तु रामभक्ति का अर्थ
 नायिकाए पतिका पा यगिक मत्री है। य जीवन तथा समाजकी आगाभाकी
 झलती है। कृष्णभक्ति का अर्थ नारिका परकीयाण हाकर भा गणन तथा
 पीडाए नही झलता जब कि रामवृत्तका नायिकाए स्वकायाए हाकर भी समाजक
 गत दण तथा पुत्र्य सद्हापर आत्मबलि करती है। कृष्ण नामक है बाय
 रूपमें वीर है। राम विचार रूपक बाद वीर तथा नता दाना है। कृष्ण बाय
 रूपम हा वी क धमक प्रताक लक्षकी चनीती दत है किन्तु राम सभी दवनाआही
 स्तुति करा है। कृष्णका लोला विचारावस्थाक बाद लगभग धाग हा जाती है
 जब कि रामका विविध लाकाए उत्तरात्तर अग्रसर हाती है। राम गृहस्थ और
 एकपत्न्यागत है जब कि कृष्ण गृहस्थ धमक मुक्त तथा गापाजन-बल्लभ है।
 राम जयाध्याम उत्तर लकातकका विविजय करत है जब कि कृष्ण मरुयत मथुरा

और गांधीजी हर्कार ह (भक्तिपाट्रियमें) । इस भाति राम तथा कृष्ण
 चरित्राक माध्यम सामाजिक परिणामाकी एक तुलनात्मक मासासा गे जाता ह
 यद्यपि इसका स्वरूप कवठ चरित्रगिल्पर हा कद्रित ह । यू हमारी
 सामाजिक दृष्टिस यह तथ्य भा जोखल नहा हाना चाटिए कि आलाच्य
 मन्थकालक भक्ति प्रधान चरणमें जो राम और कृष्णअन्तारक रूपम बंदित
 हुए ह महाभारत तथा रामायणर पूव इतिहास कालमें उनस विगिष्ट एति
 हासिक आदश भा जु ह और वहा व चरितनायक ह । कालकी लम्बी
 यात्रामें राष्ट्र अपन राष्ट्रीय आ शौकी मिश्रकाय चरित्राम विकसिन करत
 ह और इस प्रकार सम्पूर्ण अतीकस रि ता जाड लत ह । इसालिए सामाय
 मानवीय आदर्शों साथ विगिष्ट एतिहासिक आदश जुड गाया करत है ।
 महाभारतक कृष्णका चरित्र बहुत यापन एव विराट ह जा हमार आलाच्य
 कालमें आन्तर निनान्त एकागा हा गया ह । पूव इतिहासकालक राम और
 कृष्ण राष्ट्रीय आत्मा ह । (रामभक्ति मूत्रक नदी - क्याकि यह चतना राष्ट्रीय
 राधाना परिणाम हाता ह) । उतावे रामने दगोी उत्तर श्रिण धुराका
 एक किया ह । उ हान वानर, निपात भाल कोल किरान रायम आदि
 जातियाका आय सस्वनिमें शामिल किया - पराजित करक या मिश्रता करक ।
 व निरंतर एक मयागस वेध रह और निरंतर मनुष्यस त्वता जनना कागिण
 में रह । राम एन सुमस्वन युगक दवता नता ह । राम कठार कतयामि बधे
 ह । राममें धनुर्वेत्ती प्रधानता ह । किन उपर युग अयात मयाभारत क
 नायक कृष्ण सम्पूर्ण और निवाय मनुष्य ह । व निरन्तर दवताम मनुष्य बननेका
 कागिणमें ह । व चक्रधर गिरिधारी और मुरलीधर ह । उहान दगका पूव
 पश्चिम धुगेका एक किया ह । कृष्णका राममें यात्रा सत्रप और कूटनाति
 अपनाना पना था क्याकि एक ही कुम्बगमें अपन हा कौरव पाण्डवाक बाच
 याय अयायन पन कट गय थ । अतएव कृष्णका राजनीति तत्रा कूटनाति दाना
 का इस्तमात करना पना । पाचाला और पाण्डवाकी संधि करानर उहोंन
 कुहपाचाल धुरा कायम का, और राजगिरिका अयायी मगन धुराका विनष्ट
 कर दिया । कृष्ण-मगक नायक द्वारिका हिमालय मणिपुर उपमी आदि
 छार तर पडूबते ह । कृष्णक युगमें प्रखरता कूटनाति संधि विग्रह और
 बौद्धिकताका बालमात्रा था । महाभारतक नायक कृष्ण ह और नायिका सावला
 द्रोपदी । द्रोपदी राजत्राका नवितता पतियाक चलत म्वाभिव तथा कनीबताका
 प्रखर चुनौता दता ह । इस तरह राम और कृष्ण भारतीय मिश्रकाय चरित्र तथा
 एतिहासिक आत्मा रह ह जिनक चरित्राका याथया प्रत्यन युगन अपना विचार

धारा में खतनाही पुराणपर का है। मुगलिक मध्यराज्य भविष्यवाणी परन्तु रामयुक्त तथा कथनयुक्त जो स्वयं उभरा उनसे विद्यमान हम हाथीतरंग ही चुक है। उक्त वाक्य में प्रकाशित कथापरिचय तथा परिचरणी पौराणिक संरचनाएँ द्वारा प्राप्त जाइया - तथा उनसे द्वारा जन्मदाता नित्यगुण समाज - को नव आत्म प्रान करनी ध्यान दृष्टि पुराण मय रती थी। य पुनः लान मुगली थी। अतः भविष्यवाणित्य धमयुग तथा एतांती मुगलम दोना हुआ।

यहाँ एक नया सवाल उठता है कि मध्यराज्य भविष्यवाणी प्रमाण समाज और जीवनको प्रेरणा प्रदान करने का युग था? क्या यह केवल कथनयुक्त था या इस अनुप्राणित करनेवाले का अनिश्चित सम्मरण था जो कालांतरमें इतिहास सापेक्ष विज्ञान पर अनिश्चित आत्म मान रहा गया? हमारे अनुसार यह आत्म समाज और जीवन का और गुणात्मा काल था। युगमय युग एक ब्राह्मण संघाट था। उनमें मानव धर्मशास्त्रों का प्रयत्न कराने ब्राह्मणों का पुनः भूमि पर पतन प्रनिष्ठित किया। यथार्थवादी पुनः प्रविष्टा करके यथाशक्ति पुनः प्रीतिवित्त किया। सत्यतया राजभाषा पर पुनः अहित किया और आजाता शोक तथा यवनाका पराजित किया। इसा भविष्यवाणी साक्षात्कृतमें ब्राह्मण सिद्धांतों आधारपर एक आत्म राज्य रचनेकी चष्टाएँ हुई। सम्मगलन विभक्तियों की अवमय मय नियम और गणतंत्रात्मी समाज करके एक कथमय राज्य कायम किया। सम्मगल अमुरविजय था। उक्त धम विजय विजय प्राप्त किया तथा गौरी पक्षी का उद्धार किया। उक्त धमिय और ब्राह्मणों सम्बन्धात्मा मुक्त करके बागल (अधीष्ठा) पर धम ध्वजा फहरायी। यवनात्म रणकथ और मनक आदिक अनुकूल धममय रणक सचात्कथ। किंतु गलान गणाका समाज करके और समाजको द्विज शत्रिय तथा गौरी स्थायी घुरीमें बाँटकर एक सामन्ताय अथतंत्रकी उत्पीडक मोव भी डाका। फिर भी, समग्र रूपमें गण साम्राज्य तथा सम्मगलकी दिग्गजय राष्ट्रक लिए वास्तविक जावन तथा आत्म जीवनका मिलन विज्ञान हुआ गया। कालांतरमें य दाना ऐतिहासिक तथ्य क्रमण आदिक निजघर [लाजण्ड] और पराण होत चल गया। यहाँ तत्र कि कालिदासन रघुवण म जा दिग्गजय वणन और यद्ध वणन किया है वह प्रवर स्वयं सम्मगलकी दिग्गजयका रूपायन है। तुलसीन जिस आदिक समाज राज्य और सम्राटकी कल्पना की है वह गणा और गलान यगसे परम्परा रूपमें अनप्राणित है। तुलसीन ब्राह्मणात्मा भू-सुर कहा है पक्षी गौरी उद्धारक हनु अवतारकी चचा का है श्रीरामकी अमुरविजयी बताया है तथा रामके

घममय रथका रूपक (लकाकाण्ड) मनुक आत्मोंके अनुसूप किया ह। उहाने
 वणाश्रम घमका रक्षा और प्रतिष्ठा का सर्वोच्च लक्ष्य प्रतिपादित किया ह
 तथा द्विज, क्षत्रिय और शूद्र अमानवाय घमकी भा वकालत का ह। इन भाति
 तुलसीक लक्ष्मणलक आदर्शोंक सात झिलमिला उठते ह। लेकिन रावण
 और रावण पक्षकी रचना कम हुई ? पहल सात ता पौराणिक अमुर और
 दानव ह हा दूसरे सातके रूपस पूर्ववर्ती मुसलमान हमलाकराका वररताए
 ह। अफगान ग़ासकान निरकुंग टूट पाट हिमा मतिराक विध्वंस
 बलियाक कत्लेआम जलत हुए गहरा और गाँवके खण्डहरा तथा भुवमरी
 अकाल और धार्मिक अत्याचाराम भारतीय समाज और हिंदू सभ्कृतिको
 रीं नाला था। लोक चित्तमें व बररा और म्लच्छाक रूपमें भयपूर्वक
 प्रतिष्ठित हा चुन थे। इनके काफा वात तुलसीका जीवन अन्वर (व
 अक्बरस दस वष बड थ) जहागीरक ग़ामन-कालमें गुजरा। यह आरम्भिक
 मुगल युग ग़ाहशाह अक्बर महानक आत्मोंक डलकर द्वितीय भागताय रिनसों
 (गताके स्वणयगक वात) होकर पल्लवित-मुत्पित हुआ। स्वय अक्बरन समुद्र
 गुप्तक पौत्र विक्रमान्तिकी तरह नौ श्रेष्ठ मन्त्रियाका नवरतन मण्डल बनाया
 था। उहान हिंदू मुसलमान सभ्कृतिक मेलस हिन्दुस्तानी सभ्कृतिकी सुत्त नीव
 हाती इसगाम और सूफा और इसाई मनाक मेलम दान इलाहा चलाया
 बन् पमानपर भूमि मुधार गगू किय जजिया कर हटाया हिंदू राजकुमारियासे
 विवाह किया अपन दरबारमें गग, पहकर बीरवल रहाम जस कवियाका
 सम्मान किया रामायण तथा महाभारतक फ़ारसी अनुवाद कराय गया। इस
 भाति भारतमें हपवधनक वात पुन एक उत्तर और मुत्क सम्राट तथा साम्राज्य
 अम्पन्ति हुआ। अक्बरके ग़ामनम टूटपाट और धार्मिक अत्याचार लगभग बन्
 हा गय और कियानाको अपनो उपजका दा तिगाई भाग रखनका अधिकार
 मिला। फलत भारतमें गान्तियाकी गराबी और अत्याचारमे थोड़ी राहत
 मिली। उत्तरताके इसी वातावरणमें तुलसीदासका जावनकाल स्थित ह। इसी
 लिए तुलसीदासम आगावात्की प्रवानता ह। एक कट्टर ब्राह्मण हानक नात वे
 मममाना तथा शूद्रा सेनाक ही प्रति उत्तर नहा हो सक किन् उनक रागस
 और अमुर तथा उनके काय बहुधा पूर्ववर्ती आक्रान्ताआक्र प्रतिविम्बित आम ह।
 उस युगमें युद्धक चार आतक थे - थाग अनाज मौत टूटपाट। थाडा आचय
 नम वातपर अवश्य होता ह कि लाकभापाआक मूर और तुलसी जम महान
 कवियान भी विनजी और अफगानाक हमलाकी कहीं भी प्रयत्न चर्चा नही की।
 अमुगाकी माया तथा विध्वंस लीलाक रूपमें ये एतिहासिक सम्मरण भा अदभुत

और मिथरीय बना दिया है। यह तरह हम रामराज्य और राजसूय मन्त्रनाम
 कावो गोमो सरागागा मन्त्रनाम गोमिनीराजरा मन्त्रनाम मन्त्रनाम तरा
 मान है। यह अन्तर्गत उन्नीस आन्त मन्त्र (धाम-द्वारा) आन्त मन्त्र
 आन्त मन्त्र और आन्त गोमिनी जा प्रतिमान पत्र दिव है य गात्रराज
 निगमागम-मन्त्र है। मध्यराज गोमिनीराजरा मन्त्र मन्त्र प्रयात
 तत्त्व है। मन्त्रराज गोमिनीराजरा मन्त्र मन्त्र त र ह मिथरीय
 कावो बाध। मन्त्रनाम अन्त यामात मन्त्र तथा मन्त्र मन्त्र
 एत अतीत एत मिथरी (राजसूय) अन्तर्गत अन्तर्गत गोमिनी मन्त्र
 धमन ह्य मन्त्रनाम चन्द्रकी उन्नीसवाली। यह चन्द्र प्रयात कावो यग और
 मन्त्रनाम धमना ह (जिम तरा वम मन्त्र)। इन मन्त्रि अन्तर्गत-यामा
 मन्त्रि गोमिनी राजरा बाधारी सुन्नी एन्तर्गत अन्तर्गत भा सुग मन्त्र पूर एत
 मिथरीय अन्तर्गत ल गय। यह के परिणाम निम्न दिशा मन्त्रा यन्त यन्त
 और कावो मिथरीय दानारा प्रभावित दिशा। मन्त्र मन्त्रा यन्त एत मिथरीय
 कावो प्रयात मन्त्र ह्य स्वर्णयुग या मन्त्रयुगमें मन्त्रमन्त्र ह्यरा और एत कावो
 अन्तर्गत दन्तर्गत मन्त्रि गोमिनी बाध-बाध प्रयात ह्य ह। मन्त्रनाम उन्त
 पूर अन्त और अन्त अन्तर्गत यन्तर्गत अन्तर्गत कावो यो दिया गया। पूर
 युग मन्त्र अन्त युगमें या मन्त्रियत पात्र मिथरीय युगम उन्तर्गत हा जावे है।
 उन्तर्गत मन्त्रि पर्वतार पराशराम और परवर्ती अन्तर्गत मन्त्रा यन्त और
 उन्त परवर्ती गोमिनी मन्त्रि वाल्मीकि राम और उन्त परवर्ती मन्त्र तापरा
 सुन्नी एत हा मन्त्रमें उन्तर्गत हा जान है। एते अन्तर्गत आन्तर्गत मन्त्रि
 कावो मिथरीय भी मन्त्रि करत है अन्त मन्त्र कावो रामराज ह्यिका अन्तर्गत
 हाणा है और कावो मन्त्रि मन्त्र या मन्त्रि एत उन्तर्गत गोमिनी करत है मिथरीय
 रामराज-मन्त्रमें गोमिनी हात है (मानस १।१०५।१) राम बाधामें अन्त है
 (मानस १।३१४।१) राम राजेय यन्त लेगा है (मानस ६।८०।१) तथा
 रामका मन्त्र मन्त्र अन्त है (मानस ६।११५) विजयी रामकी दन्त्र मन्त्रि
 गत दन्त्र अन्त है (मानस, ६।१०१।१) नारद बराबर अन्तर्गत आया करत
 य और कावो रामका नय नय चरित्र मन्त्रकर ब्रह्मलोकमें गोमिनी करत य नारद
 यन्त रामरा नागपात्र मन्त्र करनेके लिए विष्णु-वाल्मीकि मन्त्रो लका भजन है
 (मानस ६।७३।५) नारद विष्णुना गोमिनी दने है कि व नर मन्त्र हाकर वातरा
 के साथ विरहका दुःख भागें गोमिनी सरस्वती गोमिनी और पावनी (जा अन्त
 अन्त राम-मन्त्रा मुन रत्ना धी) कावो मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
 रामका मन्त्र जा मन्त्रा मन्त्र (मानस १।३१७।३ ४)। इसा तरह परवर्ती युग

भी मियकीय ह जैसे, आज भा (तुलसीक समयम) विभाषण अपन समाजमहित
 लकाके राज्यपर आसीन ह (दोहावली १६४) रामके दिव्य परिवारमें हनु
 मान और भरतने कहनपर लक्ष्मण रामकी सेवामें तुलसीदासका विनय पत्रिका
 अथान अर्द्धी पत्र करत ह और रघुनाथ तुलसीकी सच्ची सवाक पत्र
 स्वरूप उसपर सही कर दत ह (विनयपत्रिका २७०) बनवासी रामका
 वात्मीनि अपन आश्रममें लन आते ह (मानस २११२४) । इम चतनामें काल
 प्रवाहकी इनाई बहुत विराट हाती ह । गिव सत्तासी हजार वर्ष बीतनपर अपनी
 समाधि खोजने ह (मानस ११४७।६) तपस्विनी पावतीन एक हजार वर्षों तक
 मूत्र और फत्र खाय तथा तीन हजार वर्षों तक मूख वचन गाय (मानस
 ११७३।१२) । मियकीय कालका दूसरा नतीजा यह हुआ कि अपरात्र और
 दण्ड, पुण्य और पुरस्कारका विधान पूव बनमान पश्चान तीना जमामें प्रतिक्रिप्त
 हान लगा । पूव जमके गाप पाय हुण पात्र उस जममें रामस पापाणशिखा
 सम्पानी, कारभुगुण्डि आदि बनत ह तथा रामद्वारा उद्धारित हात ह । पूवजमके
 पण्याक पत्रस्वरूप पात्र उस जमकी भागत ह । इसी आध्यात्मिक यामे अगत्र
 जमन निणय भी हाते ह । इसी प्रवृत्तिका चरमोत्तम रूप अवतारवात् ह ।
स्वयं हरि पूण, जग, कला, विभूति, आवग, लीला, युगल तथा राम इन नौ
रूपामें अवतार देते ह । मियकीय कालका तासरा परिणाम यह निकला कि
 तथ्यात्मक ऐतिहासिक चतन की उपेक्षा हुई । तुलसी इतिहासमें मियकीय आर
 तथा मियकम लोकतात्त्विक इतिहासकी आर आत जान रह । रामक विधानमें
 वृत्तिक तथा लौकिक (अथान मध्यकालीन) दाना रीतिपाका किया जाना
 (मानस ११३०।१) बनवासी रामका अवध रायक गाँवा तथा पुरवाने बीचस
 गुजरना (मानस २१११२।१) बनवासी रामका देखने अल्पवयस तापस
 तुलसीका आना आदि मियकम लोकतात्त्विक इतिहासकी आर प्रयाणके दृष्टांत
 ह । इसी भाति गिवद्वारा मानस की रचना करना (मानस ११३३।५) तीय
 राज प्रयागका तत्कालीन चित्रण करत-करते तुलसीद्वारा वहाँ याज्ञवल्क्य एव
 भरतजका बखान कर दना (मानस ११४४।१) चित्रकूटक भरतकूपके बावत
 फली लाककथाक आधारपर मानस क भरतकी उसस सम्बद्ध कर दना (मानस
 २।१००।१-६) आदि लोककथाओंस मियकीय और प्रयाणक दृष्टांत ह ।
 मियकीय कालकी चेतनामे युक्त इतिहास-रत्नकी विधा कसी हो जाती ह इमक
 अनूठे नमूने तुलसीन पत्र किय ह । पहल तो मियकीय चतनावाला इतिहास
 लेखक हमगा रूपका और अवापत्ता (एलिगॅरी) के द्वारा अपनी भावना व्यक्त
 करता ह दूसर वह स्वयका लखक न मानकर विसा दवता की प्रेरणा गुण

बग़ाती यं श्रव ने देता ह गोपरे वर तनाम पन्नाप्रसा नामाशिर गनिवाहा
 परिणाम न मानरर वमरर भोग माता ह गोप व ताप म्याना आप्रमा
 नने-सटा आि रर हा जमना रचना ह पौरों व गनिगिन लुप्याी यत्राय
 पौराणिक गल्प वेग करता ह और अन्त उमरा वा विभाजन चतुसगारे
 आधारपर हुआ करता ह । मत्त तुन्गात जि सन्नाला अक्षय सागा नर
 या क्लिका हारर ऊन हा जाली (माग रिनय रिनहा रनिगशाली
 गीताखली) और जब व तीर्थो आधमा आशिरा यगन करा है तत्र व यतु
 हो जात है । गातायगी में निरतु य करत ममप (४३-५२) उमरा
 प्राकृतिक मुन्तरताम अधिर प्राशिर पावनता सृष्टि मनिदा तथा स्वय राम
 सीता लक्ष्मण निवाम परित्र मन्नातिनाका माग्म्य गाया ह । सारा प्रशिरा
 मानो आध्यात्मोत्तरण हा गया और इन अशौरिक पाचार रन्नी वजह
 उसरी गाभा शिन शि अधिराधिर अधिराना जाती ह । य सारा यगन
 स्वकार गाभा भारम शक हुआ ह । म्गाव समानातर वजितायगा वा वा
 वणन है जहाँ प्रशिरा गयाग नी ह (१६९-१८३) । इतिगमवा श्रुति
 वागी ब्रह्माकी रथी ई दिष्णरी यमायी ह और गन्की निवाम भूमि ह ।
 यहाँ परशित ब्रत राजा भी च व ह (ज गार ती) । य देवता दवी
 देवनी गगा मिठ और मनि रहत है (तरागीन मनात्र रि व म) यरी
 रन्वा पुष्प शहर और स्थिरा पावती ह क्यानि व न एसा वग ह ।
 वागीमें मन्मय ज टादुर उमा ती ठदुराहा ह म्क गण योडा ह वा
 भरत वातवा है भरव दण्णाधीन है गग जग शभागद् ह अर्था वास्तविक
 राजा रानी सूक्ष्मर कोनवा मोरमगा मसक्षरका कोई सत्ता-मत्ता नी
 ह । आज वागीरूपी वपलनाका क्लिय रिपर निरान वाट रग ह । मग
 मारी फनी ह । क्या ? गरा गदगोपी वजहस नी बनि उन गगारे पापने
 कारण जि न रागारा तथा ब्रह्मणाका माररर और वाशि कुमागोम घन
 कट्टा किया ह । सम्पण वागी वणन रूपगमे जन्ति ह । ए उन्हाहरणाके
 विन्पेपगमे इम मानम आशिक एतिगितिक तथा मिषकीय विभाजनके गू
 रन्म्य पा सवेंग । मिषकीय बालकी चतनारा चौथा परिणाम य हुआ कि
 देवता प्रकति पग फगा मानर रागस अधमानव आशि सभी एव वायव जग
 हो गय सभीपर एव ही प्रकारका नतिक और धार्मिक विधान लागू हुआ सभी
 मानवाकी भाषा भावनायके हा गय और सभीका उनके सुकर्षो-सुक्त्वाका
 फल उनकी गका-नाम समयाग उनके वायव रारणाका अभिमान सुरत मिठ
 गया क्याकि मिषकीय जगनम तीना गक तथा तीना बाल तथा तीना प्राणी